Krishi Kumbh
Www.KrishiKumbh.Com
कृषि कुंभ
E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 01, (जुन, 2024)
पृष्ठ संख्या 12–14

तपति धरतीः पृथ्वी पर मंडराता संकट

डॉ. डी. के. मीणा,
सहायक आचार्य,
कृषि विज्ञान केद्र, कोटपुतली, भारत।
Email Id: –devendrababli@gmail.com

पृथ्वी की सतह के तापमान में निरंतर वृद्धि हो रही है और जलवायु में परिवर्तन भी आशा के विपरीत तेजी से हो रहे हैं। यह परिवर्तन संसार के परिस्थितिक तंत्र पर मंडराते एक संकट की ओर समूचे विश्व का ध्यान आकर्षित करता है। इसे हम 'ग्लोबल वार्मिंग' या गरमाती धरती कहते हैं। 'ग्लोबल वार्मिंग' का अर्थ है– पृथ्वी के तापमान में ग्रीन हाउस गैसों का बने से पूर्व हमें ग्रीन हाउस प्रभाव के बारे में जानने की नितांत आवश्यकता है। 'ग्रीन आउस प्रभाव' से तात्पर्य है– पृथ्वी के वायुमंडल में कुछ विशेष गैसों की मात्रा का इस सीमा तक बढ जाना कि पृथ्वी की ऊष्मा बाहर न निकल सके। इन गैसों में प्रमुख हैं, कार्बन डाई ऑक्साइड, जलवाष्प, मीथेन, नाइट्रस आक्साइड और क्लोरोफ्लोरो कार्बन।

दस बड़ी चुनौतियाः

जनसंख्या बोझः– दुनिया की आबादी अभी 6.91 अरब है। वर्ष 2050 तक यह 9.15 अरब हो जाएगी। संयुक्त राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक मामलों के विभाग के अनुसार यही रफ्तार रही तो अगले 40 साल में 10 में से सिर्फ एक को ही भरपेट भोजन मिल पाएगा।

तपती धरतीः ग्लोबल वार्मिंग से धरती का तापमान 1880 के बाद करीब एक डिग्री बढ चुका ह इसकी बड़ी वजह है, कार्बन उत्सर्जन। वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा नवबंर 1958 में 313.34 पार्ट्स/मिलियन थी। यह 2009 में करीब 20 फीसदी बढकर 387.41 पार्ट्स/मिलियन हो गई।

पिघलते ग्लेशियरः धरती का तापमान ब ढ़न से ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे है। आर्कटिक ध्रुव पर अभी सिर्फ 27 ग्लेशियर ही बचे है। जबकि 1990 में 150 थे। इस वजह से इस सदी के अंत तक समुद्र के पानी का स्तर 7 से 23 इंच बढ. जाएगा। कई तटीय क्षेत्र डूब जांएगें।

जल संकटः यू. एन. स्टेटमेंट ऑन वाटर क्राइसिस के मुताबिक दुनिया में आज करीब एक

अरब लोगें को साफ पीने लायक पानी नहीं मिलता। वर्ष 2050 तक दुनिया में करीब तीन अरब लोग बिन पानी या कम पानी में गुजारा कर रहे होगें। वर्ष 2025 तक भारत के करीब 60 फीसदी भूजल स्त्रोत पूरी तरह सूख चुके होंगें।

घटते जंगलः अर्थ ऑब्जरवेटरी नासा के मुताबिक वर्तमान में हर साल करीब 3.5 करोड़ एकड़ जंगलों की कटाई होती है। जंगल कटने से फल, फाइबर, कागज, तेल, मोम, रंग, औषधि आदि की कीमतें ब ढ रही है। इससे भारत को हर साल करीब 4 लाख करोड़ का नुकसान होता है।

जमीन बंजरः ओंटरियो इंस्टीट्यूट ऑफ पेडोलॉजी के अनुसार मिट्टी की ऊपरी परत हर साल 25 अरब टन कम हो रही है। यही जमीन को उपजाऊ बनाती है। इसमें 13 महत्वपूर्ण पोषक तत्व होते है, जो पानी में मिलने के बाद पेड़–पौधों और फसल विकसित करते हैं। इसके नष्ट होने पर जमीन बंजर।

रेगिस्तानः यूनाइटेड नेशन एन्वायरमेंट प्रोग्राम के अनुसार दुनिया में हर साल करीब 32 हजार किलोमीटर जमीन रेगिस्तान में तबदील हो जाती है। इस वक्त करीब 20 फीसदी जमीन रेगिस्तान की शक्ल अख्तियार कर चुकी है।

खत्म संसाधनः धरती के नीचे तेल, गैस, कोयला जैसे संसाधन लगातार खत्म हो रहे है। दुनिया में अभी हर साल करीब 8.1 करोड़ बैरल तेल का उत्पादन होता है। वर्ष 2030 तक इसके घटकर करीब 3.9 करोड़ बैरल सालाना रह जाने की आशंका है।

प्रदूषणः वर्ष 1950 में दुनिया भर में प्लास्टिक का प्रयोग 50 लाख टन होता था जो आज करीब 10 करोड़ टन है। चौपहिया वाहन प्रदूषण का बड़ा कारण है। वर्ष 1950 में दुनिया में 50 लोगों पर एक कार होती थी। यह आकंड़ा वर्तमान में 12 लोगों पर एक कार का हो चुका है।

स्वास्थ्य संकटः धरती पर इस वक्त विभिन्न जीव–जन्तुओं की करीब एक करोड़ प्रजातियां है। इनमें से अगले 20 साल में आधी ही बचेंगी। इनके स्थान पर बदलते मौसम, बढते तापमान, प्रदूषण आदि से कुछ अज्ञात जीव–जन्तु पैदा हो सकते है। ये मानव स्वास्थ्य के लिए बड़ा संकट होगीं।

बिगड़ते पर्यावरण के खतरे

➢ भारत दुनिया के उन मुल्कों में से है, जहां ग्लोबल वर्मिंग का सबसे ज्यादा असर

पड़ेगा। इससे देश की आधी आबादी यानि करीब 50 करोड़ लोगों को पेयजल, भोजन, आवास व स्वास्थ्य की समस्याओं से जूझना होगा।

- भारत में गंगोत्री ग्लेशियर अगले 20 से 30 वर्षो में खत्म होने की आशंका मूल स्थान से 23 मीटर पीछे हटा।
- भारत, चीन व नेपाल की सात नदियों पर संकट। पहले इन नदियों का जलस्तर बढ़ेगा फिर तेजी से घटेगा।
- 2050 तक देश में प्रति व्यक्ति 30 फीसदी पानी की कमी होगी, यानी प्रति व्यक्ति 1000 क्यूसेक पानी ही मिलेगा। वर्तमान में प्रतिव्यक्ति 1,140 क्यूबेक पानी उपलब्ध है।
- 2035 तक उत्तर भारत में गेहूँ की पैदावार में 30 फीसदी की कमी होगी।
- आधा सेल्सियस तापमान बढने पर गेहूँ की 17 फीसदी पैदावार कम होगी।
- 2020 तक इसका 15 फीसदी हिस्सा पानी में समा जाने की आशंका।
- ऐतिहासिक महत्व वाला घोड़ामारा द्वीप का एक तिहाई हिस्सा पानी में समा चुका है।
- 2100 तक जलस्तर 40 सें.मी. तक बढने की आंशका।
- कई क्षेत्रों में हिमखंड प्रतिवर्ष 10 से 15 मीटर पीछे हट रहे है।
- 50 वर्षो में अंटार्कटिका प्रायद्वीप की 13000 वर्ग कि.मी. बर्फ पिघली।
- संक्रामक रोगों का प्रकोप बढेगा खासकर डेंगू व मलेरिया।

तापमान–वृदि यानी तबाही

- इस सदी के तापमान पांच से छह डिग्री तक बढन का अनुमान जबकि दो डिग्री की बढ़ोत्तरी भी दुनिया में तबाही ला सकती है।
- एक डिग्री सेल्सियस की वृदि से वनस्पतियों की कई प्रजातियों को खतरा
- दो डिग्री बढ़ोत्त्तरी का असर फसलों की पैदावार पर, रूस व यूरोप पर अधिक प्रभाव
- जानवरों व पौधों की 12 हजार प्रजातियों के खत्म होने की आशंका।
- 28 अरब लोग पानी की किल्लत झेलेंगे।
- तीन से पांच डिग्री सेल्सियस बढन पर दुनिया की कुल आबादी का 45 से 60 फीसदी हिस्सा मलेरिया व अन्य संक्रामक बीमारियों की चपेट में होगा।